मौर्य साम्राज्य का पतन

मौर्य सम्राट अशोक के मृत्यु के पश्चात् ही मौर्य साम्राज्य का विघटन शुरू हो गया। अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी। इससे मौर्य साम्राज्य समाप्त हो गया।

मौर्य साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे।

(1) अयोग्य एवं निर्बल उत्तराधिकारी — अशोक अपने शासन काल में पहले ही कई भाईयों को मार दिया था जब उसे अपने राज्यों के गवर्नर बनाने का समय आया तो उसने कई ऐसे लोगों को सामंत बनाया जो मौर्यवंशी नहीं थे। परिणाम-स्वरूप अशोक के मृत्यु के पश्चात ये विद्रोह करके स्वतंत्र हो गये और अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद अपने दिग्विजय नीति को धम्मविजय नीति में बदल दिया जिसके परिणाम स्वरूप मौर्यवंशी शासकों ने अपना कभी भी राज्य विस्तार करने की कोशिश नहीं की।

राजतरंगिणी से ज्ञात होता है कि कश्मीर में जालौक ने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। तारानाथ के विवरण से पता चलता है कि वीरसेन ने गन्धार में स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली। कालीदास के मालविकाग्निमित्र के अनुसार विदर्भ भी एक स्वतंत्र राज्य हो गया था

Scanned with CamScanner

परवर्ती मौर्य शासकों में कोई भी इतना सक्षम नहीं था कि वह समस्त राज्यों को एकछत्र शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत संगठित करता। विभाजन की इस स्थिति में यवनों का सामना संगठित रूप से नहीं हो सका और साम्राज्य का पतन अवश्यम्भावी था।

आर्थिक संकट – अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अपने खजाने को बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार करने के लिए खोल दिया। अशोक अपने समय में 84 हजार स्तूप बनवाकर राजकोष को खाली कर दिया और उन सभी स्तूपों के देखभाल के खर्च का बोझ सामान्य प्रजा को करना पड़ा।

प्रशासन का अतिशय केन्द्रीकरण

मौर्य प्रशासन में सभी महत्वपूर्ण कार्य राजा के प्रत्यक्ष नियन्त्रण में होते थे। उसे वरिष्ठ पदाधिकारियों की नियुक्ति का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त था। प्रशासन में जनमत का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं का प्रायः अभाव सा हो गया था। सामान्य नागरिक हमेशा राजा के नियन्त्रण में रहता था। राज्य व्यक्ति के

पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप करता था। ऐसी शासन व्यवस्था में यदि राजा अच्छा होता तो प्रजा भी अच्छे से रहती और यदि राजा अत्याचारी होता तो प्रजा को भी कष्ट पहुंचता। कहने का महत्व यही है कि प्रशासन राजा के हाथ में था।

आर्थिक तथा सांस्कृतिक असमानतायें

मौर्यकाल में आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर की असमानतायें विद्यमान थी। गंगाघाटी का प्रदेश सबसे धनी था जबकि उत्तर दक्षिण के प्रदेशों की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत कम विकसित थी। गंगाघाटी की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी, जहां व्यापार-व्यवसाय के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त थे। उत्तर पश्चिम के प्रदेशों में स्थिर अर्थव्यवस्था नहीं थी। यहां पर व्यापार-वाणिज्य की सुविधायें बहुत ही कम थी। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग संस्कृति तथा भाषा का प्रयोग किया जाता था जिससे लोगों में एकता का अभाव होता था।

Scanned with CamScanner

करों की अधिकता — परवर्ती मौर्य-साम्राज्य में इस की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब हो गयी। जिसके परिणामस्वरूप शासकों ने अनावश्यक उपायों द्वारा करों का संग्रह किया गया। उन्होंने अनेक नये करों का संग्रह गणिकाओं पर भी कर लगाये। इतना ही नहीं कि शासकवर्ग अपना कोष भरने के लिए जनता की धार्मिक भावना जाग्रत करके दान संग्रह किया करते थे। वे छोटी-छोटी मूर्तियां बनाकर जनता के बीच बिकवाते और उससे धन कमाते थे। मौर्यों के पास एक आयुक्त विशाल सेना तथा अधिकारियों का एक बड़ा वर्ग था। इन सभी के लिए राजस्व की व्यवस्था जनता पर अत्याचार करके करता था। मौर्यों ने जनता पर सभी प्रकार के कर लगाये। अर्थशास्त्र में करों की एक लम्बी सूची मिलती है। इन करों से सामान्य जनता का जीवन कष्टमय हो गया।

अशोक का उत्तरदायित्व — मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए कुछ विद्वान अशोक को उत्तरदायी मानते हैं। महामहोपाध्याय पं० हर प्रसाद शास्त्री ने अशोक की अहिंसा की नीति को ब्राह्मण विरोधी बताया। जिसके परिणामस्वरूप अंत में चलकर पुष्यमित्र के नेतृत्व में ब्राह्मणों का विद्रोह

हुआ और मौर्यवंश की समाप्ति हुई।

Scanned with CamScanner